P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-7* October- 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

बालकों के व्यक्तित्व विकास में माता की भूमिका : एक शोधात्मक अध्ययन

लक्ष्मी शर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
जी0 एफ0 पी0 जी0 कालेज,
शाहजहाँपुर ,उ0 प्र0

सारांश

मातृत्व शब्द बहुत विस्तृत और व्यापक है, माता तथा बच्चों का रिश्ता बड़ा ही पवित्र तथा महत्वपूर्ण होता है। यह शब्द एक नारी को पूर्णता प्रदान करता है। मातृत्व ही भारतीय नारी को समाज व परिवार में सम्मान दिला पाता है जो स्त्री मातृत्व के गौरव से वंचित रह जाती है और परिवार व समाज हेय दृष्टि से देखता है। मातृत्व की अपूर्णता के कारण उसका जीवन मंगलमय नहीं माना जाता है। फलस्वरूप मांगलिक कार्यो के लिए ऐसी स्त्री को शुभ नहीं माना जाता है। भारतीय नारी के लिए परिवार व समाज में सामाजिक मान तथा प्रतिष्ठा पाने के लिए मातृत्व आवश्यक है। मातृत्व सृष्टि का आधार है, इसी में प्रजाति की निरन्तरता बनी रहती है और समाज का अस्तित्व विद्यमान रहता है।

मुख्य शब्द : मातृत्व– माता का पद, कर्णधार + खेवनहार, आत्मबलिदान– स्वयं की खुशियों का त्याग, पर दुःखकातरता– दूसरों के दुख को समझने की क्षमता, कुंठित– हीन भावना युक्त, कैशौर्य– बाल–युवा अवस्था।

प्रस्तावना

मातृत्व शब्द में पहले माँ शब्द आता है जिसका अर्थ माता अथवा बच्चे को जन्म देने वाली स्त्री से है, लेकिन यह माँ शब्द तभी गरिमायुक्त कहलाता है, जब कोई माँ, जन्म देने के बाद अपने शिशु का पालन पोषण उचित रूप से करती है जिससे वह बालक एक सुयोग्य नागरिक के रूप में विकसित हो न कि समाज के लिए भार अथवा बोझ बन जाये। वही माँ ''सुजजनी'' कहलाती है जो शिशु जन्म के बाद अपना सर्वस्व न्यौछावर कर अपनी सन्तान की देखभाल करती है, और उसका जीवन सुखी बनाने का प्रयास करती है तथा समाज के सुयोग्य नागरिक के रूप में उसका विकास करती है।

अध्ययन का उददेश्य

प्रस्तुत शोध लेख का उददेश्य बालक के व्यक्तित्व विकास में माता की भूमिका पर प्रकाश डालता है एवं उसका महत्व बताता है। यदि मातृत्व का अर्थ केवल सन्तानोत्पत्ति ही हो तो माँ तथा मादा जानवरों में कोई अन्तर नहीं रह जायेगा। अतः सफल मातृत्व का अर्थ ''सुसन्तान की प्राप्ति'' तथा शिशु कल्याण दोनों से है।

बालक की वैयक्तिता का विकास घर में होता है। उसकी माँ का दृश्टिकोण उसके प्रति पूर्णतया वैयक्तिक होता है। वह चाहती है, कि उसका पुत्र सब बातों में जन्म बालकों से बढ़कर निकले उसकी वैयक्तिकता को विकसित करने की दृष्टि से सभी परिवारजन उसकी सहायता करते है।

रेमन्ट के अनुसार, ''सामान्य रूप से घर ही वह स्थान है, जहां बालक अपनी माँ से चलना बोलना, मै और तुम में अन्तर करना और अपने चारों ओर की वस्तुओं के सभी गुणों को सीखता है।''

परिवार में बालक सर्वप्रथम भाषा सीखता है, तत्पश्चात वह भाषा के माध्यम से नैतिक व सामाजिक नियमों को सीखता है, तत्पश्चात वह भाषा के माध्यम से नैतिक व सामाजिक नियमों को सीखता है। धीरे–धीरे वह परिवार के व्यवहारों, परम्पराओं और आदर्शो को अपनाता जाता है। इस प्रकार परिवार बालक के नैतिक और सामाजिक प्रशिक्षण का मुख्य स्थान है।

माँ की ममता, बालक से प्रेम करने का अदभुत रूप है, वह बच्चे को प्यार ही नहीं करती वरन् प्रेम का पाठ भी पढ़ाती है, परिवार के अन्य सदस्य भी बालक को प्यार करते है। परिणामस्वरूप बालक आगे चलकर न केवल अपने परिवार से ही प्रेम करता है, वरन वह समाज, देश तथा विश्व से भी प्रेम करने लगता है।

काम्टे के शब्दों में, ''आज्ञा पालन और शासन दोनों रूपों में पारिवारिक जीवन, सामाजिक जीवन का सदैव शाश्वत विद्यालय रहेगा।'' परिवार में प्रत्येक सदस्य को मुखिया अथवा सबसे बड़े व्यक्ति की आज्ञा का पालन करना पड़ता है, परिवार के नियमों का पूर्णरूप से पालन करेगा। स्त्री ही वह कड़ी है जो समाज को जोड़े रखने में महती भूमिका निभाता है। बालक पर माता के स्वभाव का असर सबसे ज्यादा होता है, अतः यदि माता सहयोगी भावना वाली तथा घर के बुजुर्गो का आदर करने वाली होगी तो बालक भी उनके पदचिन्हों पर चलकर संस्कारी बनकर स्वस्थ समाज का निर्माण करेगा।

शॉ के अनुसार, ''परोपकार की भावना का विकास सर्वप्रथम परिवार में होता है, जहां बालक माता को परिवार के रोगी, वृद्ध और छोटे सदस्य की सहायता और सेवा को न केवल देखते है वरन वह अकसर ऐसा करते भी है।

माता ही पूरे परिवार के भोजन आदि की व्यवस्था करती है तथा वृद्धजनों एवं बीमारों की सेवा का भार भी प्रायः उसी पर होता है, बच्चा माता के व्यवहार का अनुसरण करके घर के कार्यो एवं सेवा कार्यो में माता का हाथ बंटाते हुए एक परिपक्व एवं उदार मानसिकता को धारण करता है।

बोगार्डस के शब्दों में, ''परिवार का आधार आत्मबलिदान का सिद्धान्त है, आत्म बलिदान के कारण ही इसकी षक्ति महान है और इसलिए यह बालकों के सामाजिक प्रषिक्षण का केन्द्र है।

माता के रूप में स्त्री परिवार में आत्म बलिदान की प्रतिमूर्ति होती है, वह परिवार की खुशी में ही अपने जीवन की सार्थकता समझती है, खासतौर पर बालक के लिए माता का प्रेम विशेष होता है, बालक के सोने जागने पर ही उसका सोना जागना एवं बालक की खुशी में ही उसकी खुशी स्त्री के मातृत्व को महान बनाती है, इसी कारण बालक का अपनी माता के साथ लगाव एवं जुड़ाव भी सबसे अधिक होता है। अतः माता बालक को व्यक्तित्व को जैसे भी आकार देना चाहे वह आगे चलकर उसी रूप में विकसित हो जाता है तथा माता ईर्ष्यालु, कलहप्रिय, संकीर्ण मानसिकता एंव स्वार्थी प्रवृत्ति की होगी तो वह बालक के बाल मन पर वैसी ही छवि अंकित करके उसके व्यक्तित्व विकास को कुंठित करेगी बल्कि सरल, सहयोगी, परदुखकातर एवं परोपकारी प्रवृत्ति वाली माता अपने बालक को भी उदार, बुद्धिमान एवं विशिष्ट व्यक्तित्व वाले नागरिक के रूप में विकसित होने की प्रेरणा देगी।

माता का शिक्षित होना भी बालक के व्यक्तित्व विकास के लिए एक बहुत ही सहयोगी कारक है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के अनुसार एक पढ़ी लिखी लड़की दो घरों को रोशन करती है।

यदि माँ शिक्षित है तो वह अपने बच्चों को भी अच्छी शिक्षा दे सकती है। आज का बच्चा कल राष्ट्र का कर्णधार होगा इसलिए उसके लिए प्रारम्भ में अपने देश को अच्छी तरह जान लेना अति आवश्यक है। अतः ऐसी पुस्तकें उसे पढ़ने के लिए दी जानी चाहिए जिनसे उसे अपने देश के बारे में विस्तृत जानकारी मिले उससे बच्चा शुरू से ही अपने देश की स्थिति उसके प्रदेशों व वहां की विभिन्न सांस्कृतियों व फसलों आदि से पूर्ण अवगत हो जायेगा। यह उसके लिए बेहद महत्वपूर्ण जानकारी होगी।

माता के द्वारा सुनाई एवं पढ़ाई गयी महापुरूषों की जीवनियां एवं आत्मकथायें भी बालक के व्यक्तित्व निर्माण में सहायक सिद्ध होती है। शिवाजी की माता जीजाबाई द्वारा प्रारम्भ से ही शिवाजी को सुनाई गयी वीरगाथाओं का प्रभाव था जो शिवाजी को छत्रपति शिवाजी के रूप में ढलने में सहायक सिद्ध हुआ।

माता द्वारा बालक को सुनाई गयी गाथाओं मे देश की मान मर्यादा के लिए अपनी जान कुर्बान कर देने वाले शहीदों एवं बलिदानियों की वीर गाथायें भी बच्चो के लिए उपयोगी होगी, इससे बालक में देश प्रेम की भावना पनपेगी और क्रान्तिकारियों की बलिदान कथाओं से उन्हें आजादी का मूल्य भी पता चलेगा। सिसोदिया राजेश ने अमर उजाला 17 सितम्बर 1999 मे अपने लेख ''कैषोर्य पर दस्तक'' में बताया कि आपका बच्चा आपके लिए तो आजीवन बच्चा ही रहेगा, पर ध्यान रखे कि वह बड़ा हो रहा है। उसकी जरूरतें तथा विस्तार ले रही हैं उसके अपने खर्च हैं, उसकी अपनी रूचियां हैं, उसकी अपनी जीवन शैली है, अपने दर्शन है। कैषोर्य का दौर हर बच्चे के लिए समान तरह की दिक्कतें लेकर आता है, उसका बहुत कुछ पीछे छूट रहा होता है, नई चीजें जुड़ रही होती है, ऐसे समय में बालक को एक सच्चे मित्र की आवश्यकता होती है, यह मित्र ''माता'' से से बढ़कर कोई नहीं हो सकता। माता हर कीमत पर बालक की मदद करने के लिए उसके पीछे खडी रहती है, वह हर तरह की बात अपनी मां से कहकर समस्या का समाधान निकालने मे उसकी मदद ले सकता है।

अध्ययन के दौरान यह पाया गया है कि वर्तमान समय में किशोरावस्था के प्रारम्भ होते ही बालक अभिभावक सम्बन्धों में बिगाड़ प्रारम्भ हो जाता है तथा किशोर की आयु बढ़ने के साथ साथ सम्बन्धों में बिगाड़ बढता ही चला जाता है। सम्बन्धों में बिगाड़ में बालक और अभिभावक दोनों का ही योगदान रहता है, बहुधा यह देखा गया है कि अभिभावक इस अवस्था के किशोरों के साथ लगभग वैसा ही व्यवहार करते है जैसा कि बाल्यकाल में उनसे करते थे। अभिभावक बालक में बहुत उच्च अशाएं रखते है परन्तु व्यवहार उसके साथ ऐसा करते है जैसे बह बहुत छोटा बच्चा हो। इस अवस्था में किशोरो में अभिभावको की यह शिकायत रहती है। कि बालक अपने उत्तरदायित्वो का निर्वाह नही करते है। उनके अध्ययनो डूबेल, लेविस व पावेल 1965 द्वारा यह तथ्य प्रकाश में आया है कि अभिभावक और बालको के सम्बन्धो में बिगाड़ उस समय चरम सीमा पर होता है।

जब किशोरो की आयु लगभग चौदह से पन्द्रह वर्ष तक की होती है।

किशोरो का सम्बन्ध पिता की अपेक्षा मां से अधिक होता है क्योकि मां पिता की अपेक्षा घर मं अधिक रहती है और फिट पालन–पोषण का अधिकांश भार माँ के ऊपर ही होता है। अतः इस अवस्था में सम्बन्धो में विगाड़ भी पिता की अपेक्षा मां से अधिक होता है। सामान्य यह देखा गया है कि बालको व अभिभावको के सम्बन्ध में

बिगाड़ तेरह वर्ष की अवस्था तक चरम सीमा पर पहुँचकर धीरे–धीरे उसमें सुधार प्रारम्भ हो जाता है।

किशोर लड़कियों के प्रति माता का अधिक सचेत रहना आवश्यक हो जाता है क्योकि वर्तमान समय में लड़कियो का अधिक समय तक घर से बाहर रहना, रेस्टोरेन्ट, सह–शिक्षा, केविल/दूरदर्शन एवं इन्टरनेट का प्रभाव उन्हें कदम बहकाने में उत्प्रेरक का काम कर सकते है। अतः माता का कर्तव्य है कि किशोरी पुत्री के साथ मित्रवत व्यवहार रखकर उसमें सही–गलत में फर्क समझने की बुद्धि विकसित करे।

साहित्यावलोकन

इस विषय पर किसी भी विद्वान, समाजशास्त्री ने आज तक कोई शोध कार्य मेरी जानकारी में नहीं किया है।

शोध का महत्व

प्रस्तुत शोध सामाजिक शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है निम्न पंक्तियों में इसके महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

सामाजिक दृष्टि से प्रस्तुत शोध का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। किसी भी देश की पारिवारिक व्यवस्था उसकी सामाजिक व्यवस्था पर निर्भर करती है। अर्थात् जैसी सामाजिक शासन व्यवस्था होती है वैसी ही पारिवारिक व्यवस्था भी होती है। यद्यपि हमारा समाज पुरूष प्रधान है तथा परिवार में स्त्री को आदर व सम्मान का दर्जा प्राप्त है यदि किसी समाज में कन्याभ्रूण हत्या, घरेलू हिन्सा, एवं दहेज प्रथा आदि प्रकारो से स्त्री की दशा दयनीय है वह ऐसे समाज कभी भी प्रगति नही कर सकता। शोध लेख में बताया जा चुका है कि बच्चो का सबसे घनिष्ठ सम्बन्ध उनका माता से होता है। अतः यदि माता को ही किसी परिवार अथवा समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता है तो वहां के बच्चा का विकास भी अवरूद्ध हो जाएगा ऐसी परिस्थिति में बच्चो भी तो हिंसक बनेगा अथवा अन्तरमुखी समाज के किसी भी विकसित समाज व विकसित देश का निर्माण वहां के विकसिक नागरिकों पर निर्भर करता है और आज के बालक ही कल के विकसित नागरिक होगे। अतः स्वस्थ समाज की नीव रखने के लिए समाज मे स्त्रियो की सामाजिक दशा में सुधार लाना होगा।

प्रस्तुत शोध लेख का शैक्षिक दृष्टि से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान है परिवार को शिक्षा का औपचारिक साधन माना जाता है एक अन्य परिभाषा के अनुसार शिक्षा बालक की अर्न्तरनिहित योग्यताओं की विकास के प्रक्रिया है परिवार में यदि बालक की माता शिक्षित होगी तो वह अपने वालक को उचित शिक्षा दे सकती है क्योकि बालक का सबसे अधिक प्रेम एवं लगाव अपनी माता से ही होता है। अतः शिक्षित माता के सानिद्ध में बालक सरसता एवं प्रेम में औपचारिक शिक्षा ग्रहण कर सकता है।

प्रस्तुत शोध मनोवैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैः–मनोवैज्ञानिक आधुनिक परिभाषा के अनुसार मनोविज्ञान व्यवहारो का विज्ञान है यह विभिन्न प्रकार के व्यवहारों में तथा परिस्थितियों के ''कारण प्रभाव'' के सम्बन्ध को स्थापित करते है तथा दी गयी परिस्थिति में व्यवहारों का पूर्वानुमान लगाने में भी सक्षम होता है बच्चे के व्यवहारों पर एवं उनके व्यक्तित्व पर उनकी माता का अति प्रभाव पड़ता है। अतः यदि माता की शैक्षिक सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक एवं (व्यवहारिक) पृष्ठ भूमि स्वस्थ होगी तो वह अपने बालक के स्वस्थ विकास में सहायक बनेगी।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति की गतिशीलता ने परिवार को प्रतिमानो में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन किए है अभिभावक–संतान सम्बन्ध तथा स्त्री–पुरूष सम्बन्ध में परिवर्तन हुए है साथ ही साथ स्त्रियों और पुरूषो की आर्थिक सामाजिक स्थिति में परिवर्तन हुए है। परिवार का आकार दिन व दिन छोटा होता जा रहा है। गांव की अपेक्षा शहरो के परिवार अधिक छोटे होते है गांव और शहरो के कम पढ़ेलिखे लोगो की अपेक्षा पढ़े लिखो लोगो के परिवार अपेक्षा कृत अधिक छोटे होते है पिछले 50 वर्षो की अपेक्षा अब रिश्तेदारों से आपसी सम्बन्ध अधिक दुर्बल होते जा रहें है। अधिक महंगाई और समय की कमी के कारण रिश्तेदारों में अब सम्पर्क कम है बच्चे भी लगभग 10 घण्टे घर से वाहर व्यतीत करने लगे है। परिवार की स्त्रियां भी अब पहले की अपेक्षा अधिक बाहर रहने लगी है।

भारतीय परिवारों में तालाक का प्रचलन बढ़ा है। अतः पुर्नविवाह भी पहले की अपेक्षा अधिक होने लगे है। बालको पर अब परिवार का उतना नियन्त्रण नही रहा है क्योकि परिवार के बड़े–बड़े सदस्यों को न अपने काम से फुर्सत है न अब उनमें बालको के प्रति वह पुराने मूल्य रह गये है और न ही बालक बड़े–बूढ़ो को सुनते है। अतः माता का कर्तव्य हो जाता है कि वे बालको को सही संस्कार दें।

उपरोक्त शोध लेख में विवरण से स्पष्ट है कि बालक के पालन पोषण में अब माता का कार्य पहले से कुछ अधिक हो गया है। बालको की शिक्षा की ओर माता ध्यान नही देती। परन्तु उनमें उचित संस्कारो का बीजारोपण भी अत्यन्त आवश्यक है केवल किताबी शिक्षा में बालक में वह संस्कार बिकसित नही हो सकते है जो उसे सम्बन्ध व्यक्तियों के उचित मात्र संस्कार के सरल मिजुलकर सहयोगी भाव में रहने की प्रेरणा देते है पाश्चात्य संस्कृतियों का प्रभाव और कुछ अन्य प्रमुख कारण है जिन्होने पारिवारिक मूल्यों को बदलने में अपना सहयोग दिया है। मूल्यों में परिवर्तन के कारण अब परिवार का संगठन और वातावरण आदि सब कुछ पहले से अधिक भिन्न हो गया है। अतः ऐसे समय में माता को बालको को पारिवारिक मूल्यों एवं संस्कारो का ज्ञान देकर मूल्यों को बनाये रखकर उन्नत समाज के निर्माण में सहयोग प्रदान करने की महती आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *तापसिर गांधी विरवन : दा रिलेशनशिप ऑफ पेरेन्टल प्रैक्टिस टू इन्टेलीजेन्स एण्ड स्कूल एचीवमेन्ट ऑफ जूनियर हाईस्कूल स्टूडेन्टस एण्ड इन्डोनिशिया, डी0ए0आई0 वोल्यूम नं0–47, नं0–5, 1986, पृ0–2095 ए।*
2. *टर्मन सी0एन्ड मालाइट : ''दा गिफिथ्टड चिल्ड्रन ग्रो अप'' कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी प्रेस, 1974*

3. *सिनथिया डिबे रोडिगेज साटो : फादर्स इन्वोलमेन्ट विद प्रि– स्कूल चिल्ड्रन इन दा त्रटमूल इम्प्लाये एन्ड फादर ओनली द पेरेन्टस फैमिली डी0ए0 आई0 वोल्यूम–45ए नं0– 1, 1984, पृष्ठ 76ए*
4. *जैनसमर, पी0 लायरन्स : ''फैमिली बैकग्राउन्ड एण्ड ओकोपेशनल ऐटेमेन्ट*
5. *डी0ए0आई0 वोल्यूम– 37, नं0– 9–10, पृष्ठ– 7350*
6. *जोर्डन पी0एच0 : ''दा एचीवमेन्ट ऑफ ब्लैक स्टूडेन्टस, डी0ए0आई0 वोल्यूम 46, 1985, पृष्ठ– 940ए*
7. *मारग्रेट जैनमिलर : इम्पैक्ट आन ए पेरेन्ट एजूकेशनल प्रोग्राम आन दा होम लिटरेसी एण्ड रीडिंग आफ सलेक्टिड पब्लिक स्कूल स्टूडेन्ट बिटवीन किण्डर गार्डन एण्ड फर्स्ट ग्रेड'' डी0ए0आई0 वोल्यूम 41, नं0– 11, 11, 1980, पृष्ठ 4557ए*
8. *फास्टर एस0 : ''होम इन्वायरमेन्ट एण्ड परफोरमेन्ट इन स्कूल दा जनरल आफ एजूकेशन एफेयर्स, 1972 पृष्ठ 272*
9. *हेल मेरी विलियम : ''पेरेन्टीम एण्ड एजूकेशन ए थ्योरेटिकल आफ पेरेन्टीकल रोल इन चिल्ड्रन लेग्यूएज टू रीड एण्ड राइट डी0ए0 वोल्यूम 41 नं0 11, 12, 1981 पृष्ठ– 4004ए*
10. *हरबिन केस एण्ड मेरी एलेन : ए स्टडी आफ पेरेन्टल इन्वायरमेन्ट एण्ड सेलेक्टेड फैमिली बैकग्राउन्ड वेरियेबिल एजइज रिलेटिड टू द चाइल्डस एचीवमेन्ट डी0ए0आई0 वैल्यूम 7–8 1988, पृष्ठ 2312ए*
11. *ड्राइलेट हैवल :– पैरेन्टल रोल माडल जेन्डर एण्ड एजूकेशनल चोइस'' ब्रिटिश जनरल आफ सोशोलाजी, 1998, वोल्यूम, 49 (3), 375–398*
12. *दुबे आर0 के0 : ''इन्डीसिपिलिन एमन्ग एज एवं इन्डीविजुअल एण्ड ग्रुप फेनोमेनान एट दा स्कूल लेबिल'' पी0एच0डी0 एजूकेशन गोरखपुर यूनिवर्सिटी 1971*

पत्र पत्रिकायें

13. *अनु : सुझ बुझ से सुलझेगी समस्या, ''अमर उजाला, 17 सितम्बर 1999*
14. *झा, प्रमोद कुमार : ''बच्चे कैसे बतियायें सबको भायें, अमर उजाला, 11 जून 1999*
15. *श्रीवास्तव, वीणा : ''बाली समय में क्या पढ़ते है आपके बच्चे'' अमर उजाला, 6 अगस्त 1999*
16. *सिसोदिया, राजेश : कैशोर्य पर दस्तक, ''अमर उजाला, 17 सितम्बर 1999*
17. *श्रीवास्तव, सीमा : ''बाल अपराध का मनोविज्ञान'' दैनिक जागरण, 29 मई 2000*
18. *पठानिया, सीमा : ''अब तुम बच्ची नही रही, ''अमर उजाला, 10 जुलाई 1999*
19. *बारलिया : शर्मीली बच्चे को खुलने मदद करें'' अमर उजाला, 1999*

पाद टिप्पणी

1. *जगन्नाथ के : ''होम इन्वायरमेन्ट एण्ट एकेडमिक एचीवमेन्ट'' जनरल ऑफ एजुकेशन रिसर्च एण्ड एक्सटेंशन 23(1), 1986, ए0 18–25*
2. *माथुर बी0बी0 : ''एन इनवेस्टिगेशन इन दा स्टेट ऑफ डिसीपिलिन अमांग स्टूडेन्टस ऑफ राजस्थान'' विद्या भवन टीचर्स कॉलेज उदयपुर 1958।*
3. *दबे आर0के0 : ''इनडिसिपिलिन अमांग एज इन इन्डीजिवल एण्ड ग्रुप फेनोमेनान एट दा स्कूल लेविल''पी0एच0डी0 एडूकेशन गोरखपुर विश्वविद्यालय।*